"इकाई – 4"
"a"

वाणिज्य शिक्षण मे पाठ योजना का निर्माण –

वाणिज्य शिक्षण मे पाठ योजना का निर्माण निम्नवत है।

प्रयोग → अर्जित ज्ञान पर पूर्ण अधिकार होने का सबसे प्रबल प्रमाण यह है कि आवश्यकता और अवसर पर उसका प्रयोग किया जा सके इसे पद मे शिक्षक विभिन्न प्रकार के छात्रो को अपने अर्जित ज्ञान का प्रयोग करने का अवसर देता है। गणित, विज्ञान, व्याकरण आदि मे, वह उनको करने के लिए कक्षा – कार्य, देता है। अन्य विषयों में वह प्रयोग को गृहकार्य के रूप में देकर सन्तोष कर लेता है।

पाठ –योजना → पाठ – योजना इकाई योजना का एक उपागम है जिससें शिक्षक एक विशेष समय – चक्र से सम्बन्धित शिक्षण योजना तैयार करता है। यदि पाठ –योजना ठीक ढंग से नही बनायी गयी तो कक्षा मे आवश्यक सीखने की क्रिया नही हो पाएगी। पाठ – योजना ऐसे शिक्षको के लिए और भी महत्वपूर्ण है जो शिक्षण व्यवसाय मे नये हैं। "पाठ – योजना कोई ऐसी रूपरेखा नही है जिसका शिक्षक को प्रत्येक स्थिति मे पालन करना पड़े। पाठ – योजना तो पथ – प्रदर्शक है, यह कक्षा की क्रियाओं के अनुक्रम का अभिसूचक है, महत्वपूर्ण

शिक्षण बिन्दुओं की सूची है और वांछनीय क्रियाओं और पद्धतियों से सम्बन्धित ऐसे सुझाव है जिन्हें कक्षा-कक्षाओं में काम में लाया जा सकता है।" शिक्षक को इसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन लाने का अधिकार है। यह उसके तथा सीखने वालों के कार्यों की एक लिखित योजना है।

जब आप पाठ-योजना बना रहे हैं तो आपको निम्न विषयों में स्पष्ट रहना होगा —

(1) विद्यार्थियों को आप क्या सिखाना चाहते
(2) आप उस विषयवस्तु का परिचय कैसे देंगे
(3) विद्यार्थियों को क्या करना होगा और क

परिचय →

पाठ के शुरू में विद्यार्थियों को बताएं कि वे क्या सीखेंगे और करेंगे, ताकि हर एक को पता रहे कि उनसे क्या अपेक्षित है। विद्यार्थियों में दिलचस्पी पैदा करने के लिए उन्हें जो वे पहले से ही जानते हैं, उसे साझा करने को प्रोत्साहित करें।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, लाखा, बलिया